News Expert
14h ·

सर्दी के मौसम में मछली उत्पादन प्रबंधन:- डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर।

सर्दी के मौसम में इस प्रकार करें मछली उत्पादन प्रबंधन : डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में शुक्रवार मत्स्य प्रभारी डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।

डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।

भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.

दैनिक
आज का कानपुर
कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, बहराइच में प्रसारित

मछलियों को भाग दौड़ कराकर उनका व्यायाम भी आवश्यक-डॉ. आनन्द

आज का कानपुर

कानपुर।सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉ0 श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैंगनेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।

Sign in to edit and save changes to this file.

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

शुक्रवार, 28-01-2022 अंक-27

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

मछलियां पानी से ऊपर मुंह निकालें तो समझ लेना ऑक्सीजन की जरूरत

सर्दी के मौसम में मछली उत्पादन, प्रबंधन के लिए डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने जारी की एडवाइजरी, बोले, मछलियों के लिए ऑक्सीजन अहम

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश पर मत्स्य प्रभारी डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों को समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।

डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा पांच पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं। तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने के लिए लाल दवा (पोटैशियम परमैंगनेट) तालाब के पानी में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है। इसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल डालकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा। भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर सुबह एक निश्चित समय पर देना चाहिए। साथ ही पानी में उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है। इससे मछलियां भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोत्तरी कम होती है, क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री होना चाहिए। उन्होंने लोगों को सलाह दी कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें, जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः13 | अंकः07 | देहरादून, शुक्रवार, 28 जनवरी, 2022 | पृष्ठः08

मत्स्य उत्पादकों के लिए जारी की गई एडवाइजरी

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही है तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल–पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैंगनेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए साथ ही पानी में उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलियां भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

वर्ष 16 अंक 28 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शनिवार 29 जनवरी 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

सर्दी के मौसम में मछलियों को न होने दें ऑक्सीजन की कमी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में

डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान

को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

UPHIN47963
प्रगति प्रभात
कानपुर
कानपुर, शनिवार 29 जनवरी 2022

मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद ने मत्स्य उत्पादकों के लिये एडवाइजरी की जारी

मछलियों को भाग दौड़ कराकर उनका व्यायाम भी आवश्यक : डॉ आनन्द

कानपुर 7 सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही है।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.

शनिवार
कानपुर, 29 जनवरी 2022

सूचकांक

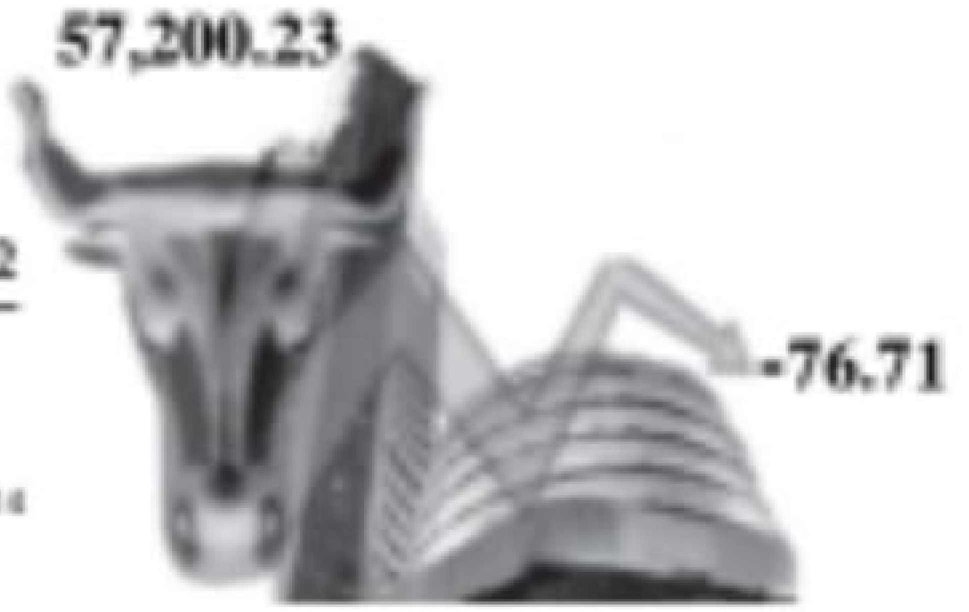

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक
व्यापारसंदेश
e-paper: www.vyaparsandesh.com

मछलियों को उनका व्यायाम भी आवश्यक : डॉ. आनन्द

कानपुर, 28 जनवरी (निस)। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है।

Sign in to edit and save changes to this file.

विशाल प्रदेश हिन्दी दैनिक
कानपुर, शनिवार 29 जनवरी 2022

मछलियों को भाग दौड़ कराकर उनका व्यायाम भी आवश्यकः डॉ. आनन्द

कानपुर(विशाल प्रदेश)सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉ0 श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप

में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैगनेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिलाकर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलियां भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे